

अप्रैल 2023

# दादावाणी

Retail Price ₹ 20

'आप' चंदूभाई को 'देखते' रहो,  
वे क्या कर रहे हैं! ज्ञाता-द्रष्टा।

अब, दोनों के स्वभाव  
अलग हो गए। आत्मा, आत्मा के  
स्वभाव में रहेगा और पुदगल,  
पुदगल के स्वभाव में रहेगा।  
अपने-अपने गुणधर्म में रहेंगे।



सावरकुंडला : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 14 - 15 फरवरी 2023



राजकोट : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 17 - 19 फरवरी 2023



जामनगर : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 20 - 22 फरवरी 2023



वर्ष : 18 अंक : 6  
अखंड क्रमांक : 210  
अप्रैल 2023  
पृष्ठ - 28

**Editor : Dimple Mehta**

© 2023

Dada Bhagwan Foundation  
All Rights Reserved.

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta on behalf of  
Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,  
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Owned by**

**Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,  
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Printed at**

**Amba Offset**

B-99, GIDC, Sector-25,  
Gandhinagar – 382025.

**Published at**

**Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,  
Dist.-Gandhinagar - 382421

**संपर्क सूत्र :**

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,  
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,  
पो.ओ.: अडालज,  
जि.: गांधीनगर-382421.

**फोन:** 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

**www.dadabhagwan.org**

दादावाणी संबंधी शिक्षायत के लिए:  
+91 8155007500

**सबस्क्रिप्शन ( मदस्यता शुल्क )**

**5 साल**

भारत : 1000 रुपये

**वार्षिक**

भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

**शुद्धात्मा पद का अनुभव करने के लिए रियल पुरुषार्थ**

## संपादकीय

अक्रम मार्ग से ज्ञान प्राप्त किए पहात्माओं को आत्मज्ञान प्राप्त होते ही खुद का निज पद ‘शुद्धात्मा’ प्राप्त होता है। अब, शुद्धात्मा से केवलज्ञान तक की क्षपक श्रेणियों की शुरुआत करना, यही एक मात्र ध्येय है। संसार की बाकी रही जिम्मेदारियाँ पूर्ण करते-करते यानी कि निश्चय में रहकर शेष व्यवहार पूर्ण करते-करते अंत में केवलज्ञान की प्राप्ति करना, यही एक मात्र पुरुषार्थ करना बाकी रहा है।

अब, पुरुषार्थ दो प्रकार के हैं : एक, भ्रांति का पुरुषार्थ और दूसरा, पुरुष होने के बाद का रियल पुरुषार्थ। ‘चंदूभाई’ क्या कर रहे हैं, उसे ‘खुद’ देखना, वह रियल पुरुषार्थ है और भ्रांति पुरुषार्थ कौन सा है? ‘खुद’ चंदूभाई होकर जो करता था, वही भ्रांति पुरुषार्थ था। भ्रांति पुरुषार्थ में बीच में भाव आता है और रियल पुरुषार्थ में ज्ञाता-द्रष्टापन है। पुरुष होने के बाद ज्ञाता-द्रष्टा रहे या तो दादा की पाँच आज्ञा में रहे, तो वही यथार्थ पुरुषार्थ हुआ कहा जाएगा।

प्रस्तुत अंक में, परम पूज्य दादाश्री ने जगह-जगह, महात्माओं के व्यवहार की उलझनों का निबेड़ा आ जाए उसके लिए विविध समझ दी हैं। परंतु उस समझ का उपयोग करने में जो परेशानी होती है, उसके सामने किस तरह सूक्ष्म जागृति में रहना है उसके खुलासे यहाँ पर हुए हैं। मैं शुद्धात्मा हूँ, अकर्ता हूँ, केवल ज्ञाता-द्रष्टा हूँ, यह जागृति ही यथार्थ पुरुषार्थ है। अब, ज्ञाता-द्रष्टा पद में रहने के लिए महात्माओं को पूर्व कर्म बाधक होते हैं। उन कर्मों के सामने तप और संयम रखकर किस तरह चंदू को अलग देखें, वही पुरुषार्थ है। और चंदू को अलग देखना, वही अंतिम ज्ञान है।

चंदू को अलग देखने का यह पुरुषार्थ प्रज्ञा करवाती है। आज्ञा में रहने का निश्चय, वह भी पुरुषार्थ है, उस निश्चय के अनुसार आगे प्रगति की शुरुआत होती है। उसके बाद धीरे-धीरे पुरुषार्थ में से पराक्रम तक पहुँच सकते हैं। आज्ञा में रहकर, खुद के शुद्धात्मा पद का अनुभव करना, वह पुरुषार्थ है और उससे आगे का पुरुषार्थ यानी कि सहज स्वभाव में आज्ञा बगैर रह सके, वह है। यह परिणाम आज्ञा पालन करने से ही आएगा, यानी कि पहले आज्ञा रूपी पुरुषार्थ और उसमें से अंत में स्वाभाविक पुरुषार्थ प्रकट होगा।

अब, महात्मागण पुरुषार्थ की शुरुआत कहाँ से करेंगे? जब महात्मा खुद के दोषों को निष्पक्षपाती रूप से देखेंगे वहीं से पुरुषार्थ की शुरुआत होगी। दादा की कृपा कहाँ बरसेगी? जिन महात्माओं ने शुद्धात्मा पद का अनुभव करने के लिए, सच्चे दिल से पुरुषार्थ की शुरुआत की है, वहाँ दादा की कृपा-आशिष सदा ही उनके साथ रहेंगे। इस काल में महात्मागण अक्रम ज्ञान द्वारा आज्ञा के आराधन से एक अवतारी पुरुषार्थ की श्रेणियों की शुरुआत करे, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानन्द

## शुद्धात्मा पद का अनुभव करने के लिए रियल पुरुषार्थ

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए बाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुलिलंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

### शुद्धात्मा हो गए, अब कौन सी साधना बाकी है?

**प्रश्नकर्ता :** स्थूल में से सूक्ष्म और सूक्ष्मतर तक पहुँचने के लिए इस प्रयोग (शुद्धात्मा के) की किस प्रकार से साधना करनी चाहिए?

**दादाश्री :** कोई साधना ही नहीं करनी है। मूल स्वरूप से आप खुद ही सूक्ष्मतम हो, फिर अब साधना किसकी करनी है? और अब स्थूल में जाएँगे ही नहीं। स्थूल और सूक्ष्म, वह सब पुद्गल (अंहकार) में रह गया। यानी कि वह फाइल हो गई। आप सूक्ष्मतम हो गए। अब कोई साधना नहीं करनी है। साधना तो क्रमिक में होती है। आप खुद ही शुद्धात्मा हो गए। अब बाकी क्या बचा? अब आज्ञा में रहना है।

यह विज्ञान है। इसे पूरी तरह से समझ लेना। क्योंकि यदि इस बटन के बजाय कोई और बटन दबा दोगे तो ठंड के दिनों में पंखा चलने लगेगा। जरा सी भूल हुई कि फिर चिल्लाओगे, ‘अरे, ठंड से मर गया’! ‘अरे, लेकिन बटन दबाने में यह भूल हो गई है।’ इसलिए जरा समझ लेना। पूरी तरह सूक्ष्मता से समझ लेने जैसा विज्ञान है यह और तुरंत ही मुक्ति फल देता है। आज से ही मुक्ति हो गई।

### बढ़ती है जागृति इस तरह

**प्रश्नकर्ता :** जागृति किस तरह बढ़ती है?

**दादाश्री :** अब ज्ञान देने के बाद जागृत

होते हैं। उसके बाद जितना पाँच आज्ञा का पालन करेगा, उतनी ही उसकी जागृति बढ़ती जाएगी। और जागृति से उन आज्ञाओं का पालन भी किया जा सकेगा और उससे जागृति वापस बढ़ती भी जाएगी। अन्य कोई उपाय नहीं है।

अब दीया बुझेगा नहीं। फिर से जलाना नहीं पड़ेगा। मन क्या बताता है, उसके ज्ञाता-द्रष्टा रह सकें वहाँ तक जागृति ले जाना है। उसके बाद उसे नहीं ले जाना पड़ेगा! यानी कि जागृति किसे कहते हैं? विचार आने से पहले ही समझ में आ जाए कि यह तो ज्ञेय है और मैं ज्ञाता हूँ।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, लेकिन इस तरह ज्ञाता-द्रष्टा पद में रहने के लिए जागृति बढ़े, उसके लिए कुछ करना है?

**दादाश्री :** जागृति तो बढ़ ही जाएगी। दादा का ज्ञान ले, पाँच आज्ञा का पालन करे तो निरी जागृति ही है।

**प्रश्नकर्ता :** पाँच आज्ञा का और भी अच्छी तरह से पालन करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** हाँ, उससे बढ़ता जाएगा सब। दादा के आशीर्वाद लिए, उससे बढ़ेगा। जैसे-जैसे आशीर्वाद लेंगे, दर्शन करेंगे, विधि करेंगे तो बढ़ता जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** जागृति बढ़ रही है, लेकिन बहुत बढ़ानी हो तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** जिसे जागृति बढ़ानी हो, उसे जागृत के साथ में बैठना चाहिए। ऐसा है न, सभी झोंके खा रहे हों तो हमें भी झोंके आने लगते हैं। सभी जागृत लोग साथ में हों तो जो झोंके आ रहे हों, वे भी बंद हो जाते हैं। इसलिए जागृत के साथ बैठना चाहिए।

**कचरा जलता है और बढ़ती है जागृति**

**प्रश्नकर्ता :** फिर उस जागृति को बढ़ाने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता?

**दादाश्री :** कुछ नहीं करना पड़ता और जैसे-जैसे फाइलें कम होती जाती हैं, वैसे-वैसे जागृति बढ़ती जाती है। आपकी जागृति बढ़ती जाएगी। क्योंकि पुराना कचरा (क्रोध-मान-माया-लोभ) निकल जाएगा न, इसलिए। बाकी, इन्हें तो अपने आप ही, उसी दिन जागृति हो गई थी न! उसके बाद से इन्हें जागृति रहती है, निरंतर। आपकी जागृति तो, पुराना कचरा जलने के बाद बढ़ेगी।

**प्रश्नकर्ता :** वह कार्य कारण संबंध है न?

**दादाश्री :** हाँ, वह संबंध है न! वह कचरा सब जला देना पड़ेगा न? फिर वह कचरा आपको किसी तरह का नुकसान नहीं करेगा। कचरा रहा ही नहीं न फिर। सचमुच में लाइफ जीना तभी सही लगेगा न? यह तो, लाइफ पूरी बिगड़ जाती है!

**प्रश्नकर्ता :** शुद्धात्मा होने के बाद, इस पुद्गल की परिणति में जो परिवर्तन होता है, वह किस कारण से दिखाई देता है?

**दादाश्री :** जागृति बढ़ने से।

**प्रश्नकर्ता :** वह जागृति किसकी बढ़ी, आत्मा की बढ़ी न?

**दादाश्री :** वह आत्मा की नहीं है। जो सोता है, जिसे भ्रांति है, उसकी बढ़ी है।

**देखते हो, वह है शुद्धात्मा का विटामिन**

जिसे जागृति रहती हो उसे एक ही काम करने जैसा है कि मन में जो विचार आते हैं न, 'आप ज्ञेय हों और मैं ज्ञाता हूँ,' ऐसा बोलें कि तुरंत सही हो जाएगा। जो जागृति में नहीं रह पाते हो तो वे 'दादा, दादा' करते रहे, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते रहे या तो उसे शुद्धात्मा का जाप करना पड़ेगा। एक क्रिया करे तो दूसरी क्रिया बंद हो जाती है। एक ही क्रिया एट ए टाइम हो और शुद्धात्मा का जाप यदि ऐसा करे कि यों किताब में देख रहा हो और ऐसे पढ़ रहा हो, इस तरह से करे तब तो बहुत अच्छा। शुद्ध में 'द' और 'ध' जुड़े हुए दिखाई दें और 'आत्मा हूँ', ऐसा सब दिखाई दें। दिखाई दें ऐसा जाप करे तो बहुत ही अच्छा है। किताब के बिना दिखाई देना चाहिए, ऐसा जाप करे तो बहुत ही उत्तम। दिनभर नहीं हो सके तो एक घंटा करे फिर भी बहुत उत्तम है। ऐसा सारा आयोजन करके रखना चाहिए। एक घंटा पद पढ़ें, एक घंटा ये करे, ऐसा सब बारी-बारी से करे। अपने सर्कल से बाहर नहीं जाए ऐसा आयोजन करना चाहिए। शुद्धात्मा के सर्कल से बाहर नहीं जाए। सर्कल कौन सा कहा जाएगा? हमने जो आज्ञा दी हैं, वह सर्कल कहलाता है। उस सर्कल में रहना चाहिए। फिर 'मुझे विचार आ रहे हैं' और उन विचारों में एकाकार हो जाए तो उसका अंत ही नहीं आएगा न! उससे कहीं शुद्धात्मा बदल नहीं जाता, अभिप्राय नहीं बदलता परंतु दाग लग जाता है।

जैसे-जैसे विचारों को ज्ञेय बनाओगे वैसे-वैसे ज्ञाता पद मञ्जबूत होता जाएगा। आप विचारों को ज्ञेय स्वरूप से देखो, वह शुद्धात्मा का विटामिन है। जिसे विचार ही नहीं आते, वह क्या देखेगा? फिर उसे विटामिन किस तरह से मिलेंगे?

## **निश्चय रूपी पुरुषार्थ**

**प्रश्नकर्ता :** दादा, क्या ऐसे-ऐसे अंतराय कर्म होते हैं, जो हमें ज्ञान में या जागृति में पीछे धकेल देते हैं?

**दादाश्री :** जो मानो वह। अंतराय कर्म या अपने पुरुषार्थ की कमी। यह पुरुषार्थ तो मैंने आपके लिए खोल दिया है। जब से शुद्धात्मा बनाया है तभी से पुरुषार्थ खुल गया। अतः आपके पुरुषार्थ की ही कमी है।

पुरुषार्थ आपको तय करना चाहिए। निश्चय करोगे तो वह अपने आप ही हो जाएगा। निश्चय करना चाहिए। आपने निश्चय नहीं किया है कि अभेदभाव से रहना है। अभी भी निश्चय कच्चा है इसलिए ज़रा कच्चा ही होता रहता है। यदि निश्चय पक्का कर लोगे तो अच्छी तरह से होता रहेगा।

वह तो फिर निश्चय करेगा तो चलने लगेगा। यदि ऐसा निश्चय नहीं हो कि यहाँ से एयरपोर्ट जाना है, तो क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं जा पाएँगे।

**दादाश्री :** कोई कहेगा ‘आप उल्टे रास्ते पर चले गए’। उल्टा तो उल्टा, लेकिन निश्चय तो होना चाहिए न? यह तो, न तो उल्टा पकड़ में आता है और न ही सीधा। उल्टे चले जाओगे तो कोई सीधा रास्ता दिखा देगा। यदि उल्टे रास्ते भी नहीं जाओगे तो सीधा कौन दिखाएगा?

**प्रश्नकर्ता :** मैं ऐसा कह रहा था कि पहले निश्चय हो जाना चाहिए कि मुझे आज्ञा पालन करना है।

**दादाश्री :** तो फिर पूरा पालन किया जा सकेगा। निश्चय सारा ही काम कर देता है। चाहे कैसी भी खराब चीज़ हो, उसमें भी निश्चय काम करता है। निश्चय अर्थात् मुझे रेलवे लाइन बिछानी

है तो वह बिछाने ही लगता है, अच्युत किसी झंझट में नहीं पड़ता। जब तक निश्चय नहीं हुआ है तब तक वह उलझता रहता है। प्लानिंग करता है और प्लानिंग बदलता है, उसमें कुछ सही नहीं होगा।

वास्तव में तो आप पुरुषार्थ में ही रहते हो। क्योंकि आत्मा प्राप्त होने के बाद में पुरुषार्थ और पराक्रम उत्पन्न होते हैं। यदि पराक्रम नहीं हो पाता है तो पुरुषार्थ करता है। पराक्रम अर्थात् जैसे कि यह कुत्ता है न, वह पूरे दिन की जो धूल उड़ी होती है न, तो वह एक ही बार ऐसे-ऐसे करके झाड़ देता है, तो सारी धूल उड़ जाती है, साफ हो जाता है। उसे पराक्रम कहा जाता है। क्या तूने ऐसा नहीं देखा है, कुत्ता क्या करता है?

**प्रश्नकर्ता :** इस तरह वह अपना पूरा शरीर साफ कर देता है।

**दादाश्री :** ऐसा कौन से प्रोफेसर ने सिखाया होगा? क्या प्रोफेसर के सिखाए बिना आ जाता है? लेकिन देखो न, कैसे साफ हो जाते हैं! ज़रा सा भी दाग नहीं रहता है उन पर! आप पुरुष बने यानी पुरुष की शक्ति पुरुषार्थ सहित होनी चाहिए, स्व-पराक्रम सहित होनी चाहिए। अहोहो! हम स्व-पराक्रम से पूरी दुनिया में धूमते हैं, एक ही घंटे में! ज्ञान देने के बाद तो यह पुरुष और प्रकृति दोनों को जुदा कर देते हैं। इससे खुद पुरुष हो जाता है। पुरुष पुरुषार्थ सहित है। कितना अधिक पुरुषार्थ कर सकता है इसमें! मैंने आपको पुरुष बनाया उसके बाद से, आपके शुद्धात्मा होने के बाद से, आपकी शक्तियाँ बहुत ही बढ़ने लगती हैं। लेकिन यदि इसका लक्ष (जागृति) रखोगे न, और हमारे टच में रहोगे तो बहुत हेल्प होगी।

**ज्ञान के बाद यथार्थ पुरुषार्थ की शुरुआत**

**प्रश्नकर्ता :** पुरुष और प्रकृति दोनों अलग हो गए, फिर तो पुरुषार्थ की ज़रूरत ही नहीं रही न!

**दादाश्री :** इस शरीर में प्रकृति और पुरुष, ये दो भाग अलग हैं। 'मैं चंदूलाल हूँ', वह सारी प्रकृति है। ये इन्द्रियाँ भी प्रकृति में आती हैं, मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सबकुछ प्रकृति में आता है और पुरुष अलग रहता है। उस पुरुष को जब खुद के सेल्फ का रियलाइज़ेशन होता है, तब प्रकृति और पुरुष दोनों अलग हो जाते हैं। यथार्थ पुरुषार्थ उसके बाद से शुरू होता है, सेल्फ का रियलाइज़ेशन होने के बाद में। तब तक यथार्थ पुरुषार्थ है ही नहीं, भ्रांत पुरुषार्थ है। यानी कि परावलंबी, खुद के अवलंबन से नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** उसके बाद पुरुषार्थ किसलिए करना है?

**दादाश्री :** हमेशा के लिए प्रकृति से अलग होने के लिए। क्योंकि प्रकृति क्या कहती है कि आप तो पुरुष हो गए, लेकिन अब हमारा क्या? आपने हमें बिगड़ा था। हमारे मूल स्थान पर पहुँचा दोगे तो आप मुक्त हो जाओगे, वर्ना मुक्त नहीं हो पाओगे। यानी उसके लिए पुरुषार्थ करना है।

इसलिए मैं कहता हूँ कि आप शुद्धात्मा हो और चंदूभाई जो कुछ भी करे, उन्हें देखते रहो। आप उन्हें देखते रहो कि, 'चंदूभाई क्या-क्या कर रहे हैं', वही आपका पुरुषार्थ है। 'चंदूभाई क्या करते हैं वह, चंदूभाई का मन क्या करता है, बुद्धि क्या करती है, चित्त क्या करता है, अहंकार क्या करता है', उन सभी को देखते रहो, उसमें दखल मत दो, वही पुरुषार्थ है। क्योंकि आपने उन सब को स्वच्छता से देखा इसलिए वह स्वच्छ होकर चला जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** फिर यह पुद्गल स्वच्छ हो जाता है न?

**दादाश्री :** हाँ, पुद्गल, जो बिगड़ा हुआ है, विकारी हो गया है, वह निर्विकार होकर, स्वच्छ

होकर चला जाता है। उसमें तो अपनी ही गुनहगारी मानी जाती है क्योंकि हमने इसे उत्पन्न किया था, तभी वह आया न, वह फिर दावा दायर करता है। यानी कि यथार्थ पुरुषार्थ उसके बाद शुरू होता है।

**'आज्ञा'** पालन से वास्तविक पुरुषार्थ शुरू

**प्रश्नकर्ता :** रियल पुरुषार्थ और रिलेटिव पुरुषार्थ, इन दोनों में फर्क बताइए न!

**दादाश्री :** रियल पुरुषार्थ में करने की चीज़ नहीं होती। दोनों में फर्क यह है कि रियल पुरुषार्थ अर्थात् 'देखना' और 'जानना' और रिलेटिव पुरुषार्थ का मतलब क्या है? भाव करवाना, 'हम ऐसा करेंगे'।

दो तरह के पुरुषार्थ हैं : एक प्रारब्ध में से उत्पन्न होता हुआ पुरुषार्थ। प्रारब्ध में से बीज डलता है, उसमें से उत्पन्न होता हुआ पुरुषार्थ और दूसरा जो है, वह है पुरुष होने के बाद का पुरुषार्थ। तो मैंने जब आपको ज्ञान दिया तब आप प्रकृति से अलग हो गए। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह पुरुष है और उसके बाद में असल पुरुषार्थ है। रियल पुरुषार्थ यह है। और वह भी पुरुषार्थ तो है ही लेकिन भ्रांत पुरुषार्थ है। गलत नहीं कहा जाएगा, लेकिन वह, ये लोग जो मानते हैं, वह पुरुषार्थ नहीं है। ये लोग जो मानते हैं उसमें कोई भी व्यक्ति सही नहीं है, पुरुषार्थ की बात को लेकर।

**प्रश्नकर्ता :** फिर वह जो रियल पुरुषार्थ है, असल पुरुषार्थ है, जो दादा कर देते हैं, वह समझाइए न!

**दादाश्री :** असल पुरुषार्थ तो, आप जब चंदूभाई थे और तब जो पुरुषार्थ कर रहे थे न, वह भ्रांति का पुरुषार्थ था। लेकिन जब मैं शुद्धात्मा हूँ और जो पुरुषार्थ करते हो, दादा की पाँच आज्ञा में रहते हो, वह रियल पुरुषार्थ है। पुरुष होकर

पुरुषार्थ किया, ऐसा कहा जाएगा। पुरुष होकर पुरुषार्थ करे, वह वास्तविक पुरुषार्थ है। यानी कि आप जो पाँच आज्ञा में रहते हो, वह।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर इसमें अन्य किसी पुरुषार्थ के लिए क्या जगह है?

**दादाश्री :** पुरुषार्थ तो, यह जो मेरी आज्ञा का पालन करते हो, वही है। अन्य कोई पुरुषार्थ करना ही नहीं है न! बाकी सब व्यवस्थित है। वे सारी आज्ञाएँ पुरुष के लिए ही हैं, प्रकृति के लिए नहीं हैं।

**प्रश्नकर्ता :** जो ज्ञान बीज बोया गया, क्या वही प्रकाश है? वही ज्योति है?

**दादाश्री :** वही! लेकिन दूज के रूप में है। अब वह धीरे-धीरे पूनम होगी। युद्गल और पुरुष, जब से ये दोनों अलग हुए, वास्तव में तभी से पुरुषार्थ की शुरुआत होती है। जहाँ पर पुरुषार्थ की शुरुआत हुई, वह दूज में से पूनम लाएगा। हाँ! इन आज्ञाओं का पालन करने से होगा। अन्य कुछ भी नहीं करना है। करना कुछ भी नहीं है, सिर्फ आज्ञा पालन करना है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, पुरुष होने के बाद के पुरुषार्थ का वर्णन तो कीजिए ज़रा। व्यवहार में वह किस प्रकार से करता है?

**दादाश्री :** व्यवहार में ही है न, यह सब! अपने ये सब महात्मा रहते ही हैं न! पाँच आज्ञा में रहते हैं न! पाँच आज्ञा ही दादा हैं, वही रियल पुरुषार्थ है।

### **ज्ञाता-द्रष्टा वही है यथार्थ पुरुषार्थ**

पाँच आज्ञा पालन करने को ही पुरुषार्थ कहते हैं और पाँच आज्ञा के परिणाम स्वरूप क्या होता है? ज्ञाता-द्रष्टा पद में रहा जा सकता है

और यदि हम से कोई पूछे कि वास्तविक पुरुषार्थ किसे कहते हैं? तब हम कहेंगे, 'ज्ञाता-द्रष्टा रहना' वह! तो ये पाँच आज्ञा ज्ञाता-द्रष्टा रहना ही सिखलाती हैं न! रिलेटिव और रियल, वे देखते हुए आगे-पीछे का जो विचार आ रहा हो तो 'व्यवस्थित' कह कर बंद कर दो। देखते समय भविष्य के विचार उसे परेशान करते हैं, तब यदि हम 'व्यवस्थित' कहेंगे तो वे बंद हो जाएँगे। तब वापस फिर अपना देखना जारी रहेगा। उस समय यदि कोई फाइल परेशान कर रही हो तो समझाव से निकाल (निपटारा) करके भी अपना वह जारी रहेगा। इस प्रकार से आज्ञा ज्ञाता-द्रष्टा पद में रखती हैं।

**प्रश्नकर्ता :** जितने समय तक ज्ञाता-द्रष्टा रहते हैं, वह पुरुषार्थ है?

**दादाश्री :** हाँ। या फिर जब औरों में शुद्धात्मा देखते हो, वर्ना यदि मेरी आज्ञा का पालन करते हो, तब भी पुरुषार्थ है। हमारी पाँच आज्ञा जो हैं न, जब उनका पालन करते हो, उस समय पुरुषार्थ रहता ही है। यदि पाँच आज्ञा में रहते हो न, तो वह शुद्ध उपयोग ही है। वर्ना प्रकृति को देखना। अभी अगर ये चंदूभाई, वाइफ के साथ किच-किच कर रहे हों तो 'खुद' उस चंदूभाई को देखे और कहे कि 'कहना पड़ेगा चंदूभाई, जैसे थे वैसे के वैसे ही हो आप!' इस तरह से सब देखना, वह पुरुषार्थ कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन फिर किसी को उस बारे में जागृति के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए या सिर्फ ज्ञाता ही रहना चाहिए?

**दादाश्री :** ज्ञाता-द्रष्टा रहना ही असल पुरुषार्थ है। खुद का जो ज्ञायक स्वभाव है उस स्वभाव में रहना ही पुरुषार्थ है और ज्ञाता-द्रष्टा रहे तो वह चारित्र कहा जाएगा, सम्यक् चारित्र कहा जाएगा।

**ज्ञान-अज्ञान भेदे, वह है रियल पुरुषार्थ**

**प्रश्नकर्ता :** जो ज्ञान और अज्ञान में भेद डाले, वह पुरुषार्थ है?

**दादाश्री :** ज्ञान-अज्ञान को भिन्न भेद करते समय पुरुषार्थ रहता है। वही पुरुषार्थ है। आप शुद्धात्मा में रहो, शुक्लध्यान में, वही पुरुषार्थ है। आप शुद्धात्मा में हो और यदि कोई आपका अपमान करे, तब तो आपको ऐसा लगता है कि यह ऐसा कर रहा है। 'वह कर रहा है', ऐसा मानते हो, वह आपके समझने में भूल है। वह भी शुद्धात्मा है और यह जो कर रहा है, वह सारा तो वह उदयकर्म के अधीन कर रहा है, वह खुद नहीं कर रहा। वह बेचारा उदयकर्म के अधीन है। लट्टू घूमते हैं और हर कोई अपने-अपने उदयकर्मों से आमने-सामने व्यवहार का हिसाब चुका देता है। हमें देखते रहना है कि ये दोनों पुद्गल क्या लट्ठबाज़ी कर रहे हैं। उसे जो देखता है, वह पुरुषार्थ है। यानी यदि आप ज्ञाता-द्रष्टा रहो, अर्थात् अंत में जो ज्ञान-अज्ञान को भिन्न रखने के बाद में अलग रहता है, वह खुद का स्वभाव है। उसके बाद स्वभाव में आ गया। स्वभाव का मतलब यही है कि सिद्धक्षेत्र में जो स्वभाव है, उसका वैसा ही स्वभाव उत्पन्न हो जाता है। ऐसा करते-करते निबेड़ा आएगा। निबेड़ा इसी तरह आता है न!

**आत्मा-पुद्गल अपने-अपने स्वभाव में**

शुद्धात्मा होने के बाद में फिर उसे लक्ष रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ'। तब यदि कोई पूछे कि 'मैं चंदूलाल नहीं हूँ?' तो कहेंगे कि 'चंदूलाल हूँ लेकिन व्यवहार से'।

आप शुद्धात्मा हो और यह है चंदूभाई। आप दो हो गए, एक से दो हो गए। अब आपको चंदूभाई की देख-रेख करनी है, पड़ोसी की तरह

और चंदूभाई को यदि कोई परेशानी आ जाए तो आप चंदूभाई का कंधा थपथपा देना, कि 'हम हैं न आपके साथ'। पहले अकेले थे, निराधार थे। अब आधार वाले हुए। पहले तो निराधार थे। किसके पास जाकर रोते? पत्नी के पास जाकर रोएं तो पत्नी उल्टा समझेगी। माँ-बाप के पास तो रो नहीं सकते।

**प्रश्नकर्ता :** अब अगर कोई बुलाए तो फिर बात करें या नहीं?

**दादाश्री :** वह तो करना। व्यवहार से सबकुछ करना, आप जानते रहना। आप कहना, 'चंदूभाई इन भाई से ज़रा बात करो अब, बातचीत करो न कुछ'। तब वे बोलेंगे भी सही और व्यवहार चलता रहेगा। आपको 'देखते' रहना है। सामने वाले को पता भी नहीं चलेगा, कि आप क्या कर रहे हो! लेकिन आप उसे देखते रहो, कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं! ज्ञाता-द्रष्टा। दोनों के स्वभाव अलग हो गए। अब आत्मा, आत्मा के स्वभाव में रहेगा और पुद्गल, पुद्गल के स्वभाव में रहेगा। दोनों अपने-अपने गुणधर्मों में रहेंगे।

**बात है बहुत सूक्ष्म**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन चौबीसों घंटे तो ऐसा नहीं रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'।

**दादाश्री :** नहीं, चौबीस घंटे में एक मिट्टी भी (यह) कम नहीं होता। एक बार तय हो जाने के बाद खुद का नाम भूल गए हों तब भी क्या हो गया? तब भी वह कोई दूसरा नाम धारण नहीं कर लेता। चौबीसों घंटे तू शुद्धात्मा ही है।

**प्रश्नकर्ता :** यह बहुत सूक्ष्म बात है आपकी। क्षण भर में समझ में आ जाए, ऐसा नहीं है। यह समझने जैसी बात है।

**दादाश्री :** समझना पड़ेगा न! इसलिए तो

यहाँ बैठे रहते हैं। आपको समझने की इच्छा हो तो मैं (समझाने के लिए) तैयार हूँ। बात बहुत सूक्ष्म है और सरल है, आसान है।

चार्ज करने वाला कौन है? ज्ञान लेने से पहले जो 'मैं चंदूभाई ही हूँ' ऐसा मानता था, वह है। हम कहें कि, 'नहीं, तू चंदूभाई नहीं, तू शुद्धात्मा ही है'। तब भी कहेगा, 'नहीं, मैं चंदूभाई ही हूँ'। वह चार्ज करने वाला था। वह चार्ज करने वाला चला गया और डिस्चार्ज कर्म अपने आप होते रहते हैं। डिस्चार्ज करने वाला भी नहीं रहा, वह डिस्चार्ज करने वाला जो है, वह व्यवहार चंदूभाई का।

और डिस्चार्ज तो स्वभाव से ही हो रहा है। पानी गर्म करना, उसे चार्ज करना कहा जाएगा। और उसके बाद गर्म पानी की टंकी को ठंडा करना हो तब यदि कोई आपसे पूछे कि, 'साहब, मुझे क्या उपाय करना होगा?' तब कहते हैं, 'नहीं, तू सो जा भाई, वह स्वभाव से ही अपने आप ठंडा हो जाएगा'। डिस्चार्ज के लिए हम ऐसा कहना चाहते हैं।

आप 'शुद्धात्मा हो', अब वे चार्ज भाव बंद हो गए, नया कर्म बंधन रुक गया।

### शुद्धात्मानुभव के अलावा कुछ भी नहीं चाहिए

प्रश्नकर्ता : चरण विधि में है न, कि 'शुद्धात्मा अनुभव के अलावा इस संसार की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए', परंतु ऐसा नहीं रहता है।

दादाश्री : वह बाहर का अनुभव नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, परंतु उसे शुद्धात्मा अनुभव अभी भी चाहिए, ऐसा (अर्थ) हुआ न?

दादाश्री : अंदर निरंतर रहना चाहिए।

शुद्धात्मा अनुभव के अलावा और कुछ नहीं चाहिए, यानी निरंतर यही रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : परंतु उपयोग तो चाहे जैसा भी हो और हमारा वह उपयोग तो हंड्रेड परसेन्ट नहीं रहता न? उतनी हंड्रेड परसेन्ट जागृति तो नहीं रहती न?

दादाश्री : नहीं रहती उसका कारण है पूर्व जन्म के कर्म।

### शुद्धात्मा की अनुभूति के लिए पाँच आज्ञा

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा की अनुभूति कैसे हो सकती है?

दादाश्री : अभी एक भाई ऐसा पूछने आए थे, आपकी तरह, मुझसे कहने लगे, 'आत्मा का जैसा अनुभव होना चाहिए, अभी तक वैसा हो नहीं रहा है'। तब मैंने कहा, 'अंदर सावधान करने वाला सावधान करता है तुझे?' तब कहने लगा, 'वह तो दिन भर सावधान करता है'। तब मैंने कहा, 'ज्ञान लेने से पहले सावधान करता था क्या?' तो कहा, 'नहीं, तब तो कोई सावधान नहीं करता था'। तब मैंने कहा कि 'वह चेतन ही सावधान करता है'। तो दिन भर आत्मा का अनुभव देख तो रहे हो। अरे! दिन भर आत्मा का अनुभव रहता है। सावधान करने वाला सावधान करता है या नहीं करता? चेतन ही सावधान करता है वह। पहले चेतन नहीं था और कोई बाप भी सावधान नहीं करता था। सावधान करता है न, चेतन? क्या कहता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सावधान करता है।

दादाश्री : अब, यही वह अनुभव है। चेतन सावधान करता है, क्या वह पहले सावधान करता था? पहले कोई भी सावधान नहीं करता था न! यही अनुभव है!

**प्रश्नकर्ता :** उस अनुभूति के लिए कौन सी प्रवृत्ति करनी चाहिए?

**दादाश्री :** पाँच आज्ञा का पालन करो तो सारी जोखिमदारी हमारी, आपको मोक्ष ले जाना है एक जन्म में।

चैतन्य विज्ञान है, वह अंदर सावधान करता है। दिन भर सावधान करता रहता है हमें! आप ज़रा लापरवाह हो जाओ तब भी वह सावधान करता है। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है? आपके लापरवाह होने पर वह सावधान करे, ऐसा?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, तब भी सावधान करता है।

**दादाश्री :** हाँ। तो वह कौन है? तब कहते हैं, तो वही आत्मा का अनुभव है। दिन भर निरंतर आत्मा का अनुभव रहे, ऐसा यह अक्रम विज्ञान है। वर्ना जगत् ने आत्मा का जो अनुभव देखा है, वह कैसा है? परछाई जैसा। परछाई देखने को चीज़ देखना नहीं कहते। परछाई को देखा है लेकिन अब, चीज़ नहीं देखी है, आभास, बस! अब वह आभास मात्र है जबकि यह तो फैक्ट (यथार्थ) वस्तु है।

### ज़रूरत है जागृति की ही

**प्रश्नकर्ता :** आज्ञा के लिए ऐसा सहज क्यों नहीं हो जाता?

**दादाश्री :** वह तो खुद की कमी है।

**प्रश्नकर्ता :** क्या कमी है?

**दादाश्री :** जागृति की कमी, उपयोग रखना पड़ता है न, थोड़ा-बहुत।

एक व्यक्ति लेटे-लेटे विधि कर रहा था। अब जागते हुए, पच्चीस मिनट लगते हैं, बैठे-बैठे। और लेटे-लेटे करने में उसे ढाई घंटे लग गए। ऐसा क्यों?

**प्रश्नकर्ता :** बीच में ज्ञपकी ले लेता है।

**दादाश्री :** नहीं, प्रमाद हो जाता है इसलिए फिर यह भूल जाता है कि कहाँ तक बोला था। फिर से दोहराता है। अपना विज्ञान कितना अच्छा है। कुछ दखल हो जाए, ऐसा नहीं है। थोड़ा-बहुत रहता है?

**प्रश्नकर्ता :** पाँचों आज्ञाओं का एट ए टाइम पालन करना इतना आसान नहीं है न! वह खींच ले जाता है मन को!

**दादाश्री :** यों रास्ते पर चलते-चलते शुद्धात्मा देखते जाएं उसमें आज्ञा में क्या कठिनाई है? कैसी कठिनाई? डॉक्टर ने कहा हो कि, 'आज से आठ-दस दिन तक दाहिने हाथ से मत खाना'। वह याद रखना है, बस इतना ही काम है न? यानी कि थोड़ी जागृति रखनी है, इतना ही काम है न? जागृति नहीं रहती इसलिए दाहिना हाथ चला जाता है उस ओर। अनादि से उल्टा अभ्यास है इसलिए।

ये पाँच वाक्य तो बहुत भारी वाक्य हैं। ये वाक्य समझने के लिए हैं, ये बेसिक (आधारभूत) हैं। लेकिन बेसिक बहुत भारी हैं। धीरे-धीरे समझ में आते जाएँगे। यों दिखाई देते हैं हल्के, हैं भी आसान, लेकिन दूसरे अंतराय बहुत हैं न! मन में विचार चल रहे हों, अंदर धूल उड़ रही हो, धुआँ उठ रहा हो, तब वह रिलेटिव और रियल कैसे देख पाएगा?

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपकी जो पाँच आज्ञाएँ हैं, उनका पालन करना ज़रा कठिन है या नहीं?

**दादाश्री :** कठिन इसीलिए है कि आपको पिछले कर्म धक्के लगाते रहते हैं। पिछले कर्मों की वजह से आज खीर खाने को मिली और ज्यादा खीर माँगता है, उससे डोजिंग हो गई इसलिए आज्ञा पालन नहीं हो सका।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, तो जहाँ-जहाँ हम आज्ञा चूक जाते हैं, वहाँ-वहाँ उपयोग चूक जाते हैं?

**दादाश्री :** चूक ही गए न, वह तो! उसके लिए बहुत चिंता नहीं करनी है। आपको अब, प्रगति कैसे हो, यही देखना है। चूक गए, वह तो... चूकना तो है ही, गलतियाँ तो होनी ही हैं। गलतियाँ तो, जितनी 'देखिं' उतनी चली जाती हैं और जितनी चली गई उतनी शक्ति देकर जाती हैं। गलतियों की वजह से जो कमज़ोरी आ गई थी, उन गलतियों के निकल जाने से शक्ति उत्पन्न होती है। गलतियाँ ऊपरी (बॉस, मालिक) हैं, और कोई ऊपरी नहीं है। ब्लंडर्स तो चले गए।

**चंदूभाई को आप 'देखें', वही अंतिम ज्ञान**

**प्रश्नकर्ता :** आप जो ज्ञान देते हैं उसमें अलग तो हो जाता है लेकिन क्या उसमें मेरी कोई कमी रह गई होगी?

**दादाश्री :** नहीं, कोई कमी नहीं है। वृत्तियाँ कहाँ-कहाँ जाती हैं और कहाँ से आती हैं? क्या लाती हैं? और क्या ले जाती हैं? वह सब 'देखते' रहना है। फिर अभी उससे आगे ऐसी कोई झूठी आशा नहीं रखनी है। अभी इतना 'देख पाओगे' न, तो भी बहुत हो गया। भगवान ने पूछा था कि, 'वृत्तियाँ नहीं दिखाई दें तो भी राग-द्वेष नहीं होते हैं न?' तब कहा, 'नहीं'। तो 'हो गया'!

अब, 'देखना' क्या है? पुद्गल के उदय को ही 'देखना' है। लेकिन जब उदय एकदम ज़ोरदार होता है तब धुँधला 'दिखाई देता है'। अतः 'देखना है', ऐसा समझ में ही नहीं आता, चूक जाता है। यदि उदय हलका होगा न, तो एक ओर उदय चलता रहेगा और 'आप' उसे 'देखते' रहेगे। आप चंदूभाई को 'देखें', वही अंतिम ज्ञान है।

**प्रश्नकर्ता :** हमारा उपयोग निरंतर उस तरफ देखने में ही रहे, उसके लिए हमें ऐसी कौन सी क्रिया करनी चाहिए कि ज्यादा उपयोग रह सके?

**दादाश्री :** इस ओर के संयोग, यानी कि सत्संग की ओर के संयोग होने चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** मेरे संयोग ऐसे नहीं हैं, तो क्या एकांत हो तो ज्यादा अच्छा रहेगा?

**दादाश्री :** एकांत ज्यादा हितकारी होता है न! लेकिन एकांत मिले कहाँ से? ऐसे पुण्य कहाँ से होंगे कि संयोग ही न हो? ये संयोग ही दुःखदायी हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** अब, आप एकांत किसे कहते हैं?

**दादाश्री :** अन्य कोई संयोग इकट्ठे न हों, कोई दखल देने वाला न हो, अपना स्वतंत्र हो और फिर बाद में आप वह सब 'देखते' रहो कि चंदूभाई क्या करते हैं। उपयोग रखने पर सब दिखाई देगा।

**प्रश्नकर्ता :** हमें पता चलता है कि अंदर क्या आया और क्या गया तो वह...

**दादाश्री :** तो वही ज्ञान है। चंदूभाई यों पूरे नहीं दिखाई देंगे लेकिन अंदर क्या आया-गया वह सब दिखाई देगा, वह पहला ज्ञान। फिर धीरे-धीरे वह पूर्ण होता जाएगा। दुनिया को तो, आया-गया, ऐसा पता ही नहीं रहता। पहले वह स्थूल देखना है। ऐसा करते-करते एडवान्स होता जाएगा, सूक्ष्म में। फिर आखिर में खुद अलग ही दिखाई देगा।

**प्रश्नकर्ता :** वैसा नहीं दिखाई देता!

**दादाश्री :** वह धीरे-धीरे होगा। एकदम से नहीं होगा यह। एक घंटा भी नहीं हो सकता

किसी से। जब संयोग होते हैं, तब हमें भी एकजोक्ट नहीं रहता न!

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि आप भी एकांत के लिए तो कहते हैं न, कि एकांत अच्छी चीज़ है।

**दादाश्री :** लेकिन लोगों को हटाकर एकांत नहीं लाना है। हमें किसी को हटाकर एकांत नहीं लाना है। संयोगों का स्वभाव ही है कि अपने आप उनका वियोग हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** यों देखा जाए तो कोई भी संयोगी चीज़ हमें छू नहीं सकती। यदि हमें असंग रहना हो तो सभी के बीच असंग रह सकते हैं।

**दादाश्री :** रह सकते हैं, खुशी से रह सकते हैं। हैं ही असंग। ऐसा है यह शुद्धात्मा। मैं असंग ही हूँ, निर्लेप ही हूँ। रोंग मान्यता टूट गई इसलिए चला गया। वह रोंग मान्यता थी। इसीलिए तो लोग कहते हैं कि, 'मैं असंग कैसे कहा जा सकता हूँ?' क्या ऐसा नहीं कहते लोग? और आपको तो खुद को समझ में आता है कि यह रोंग मान्यता टूटी।

**प्रश्नकर्ता :** हमारी फाइल नंबर वन के लिए एकांत काम का है या नहीं?

**दादाश्री :** यदि हो तो लाभदायक है। एकांत तो बहुत लाभदायक है। सभी बैठे हों न, तब हम यों आँखें बंद करके एकांत खोजते हैं। यदि आँखें खुली हों और मेरे सामने कोई देखे तो फिर एकांत नहीं रहेगा न!

**'यह मैं नहीं हूँ, यह मैं हूँ,'** ऐसा जाने वह है आत्मा

'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह और फिर इन आज्ञाओं की वह सारी जागृति रहती है। 'यह कौन, मैं कौन' ऐसी सारी जागृति रहती है। मारने वाला,

वह मारने वाला नहीं है, वह शुद्धात्मा है ऐसी सारी जागृति रहती है।

जो यह जानता है कि 'यह मैं नहीं, यह मैं हूँ' वह आत्मा है! 'यह मैं और यह नहीं हूँ', ऐसी सारी जागृति रहनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** किस-किस बाबत में खुद नहीं है और किस-किस बाबत में खुद है? उसमें क्या-क्या देखता है?

**दादाश्री :** हर एक बाबत में। वह तो हम 'ज्ञान' देते हैं न! 'ज्ञान' देते समय हम देते हैं न, कि 'यह तू नहीं है'।

**प्रश्नकर्ता :** यों अलग करते रहे, उसी को आत्मा कहते हैं!

**दादाश्री :** बस, वही आत्मा!

**प्रश्नकर्ता :** अब ऐसा निरंतर रहना चाहिए न!

**दादाश्री :** लक्ष में भूले ही नहीं उसे अलग रखना है। फिर जब हो तब अलग करते रहना, वही का वही। फिर वह आत्मा ही हो गया। कमीज़ के बटन बंद करता है इसलिए कमीज़ उतारी जा सकती है, ऐसा जानता है न, कि 'यह भाग कमीज़ है और यह मैं', या नहीं जानता? या फिर वहाँ दोनों को एक जैसा ही जानता है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, उसे अच्छी तरह से जानता है कि अलग ही हैं। लेकिन अब, ये मन-वचन-काया की अवस्थाएँ निरंतर उत्पन्न होती ही रहेंगी न? तो वहाँ पर अविरत रूप से जागृति की ज़रूरत है न, कि यह मैं नहीं हूँ और यह मैं हूँ?

**दादाश्री :** यह सारा इतना होता ही नहीं है। लेकिन इसमें कहीं पर रह जाए या आप अंदर 'इन्टरेस्ट' ले लो, तब आपको कहना चाहिए,

‘भाई, अपना नहीं है यह’। बाकी, ‘ज्ञान’ देने के बाद अलग ही रहता है। लेकिन फिर अंदर मिश्रण हो जाता है थोड़ा बहुत।

**प्रश्नकर्ता :** यानी कैसे भी परिणाम आए, वे अपने नहीं हैं, ऐसा अंदर जागृति में रखना है।

**दादाश्री :** हाँ, कि यह मैं हूँ और यह मैं नहीं हूँ!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन इसमें यह कमीज़ अलग है और मैं अलग हूँ, उसी प्रकार इसमें उसे क्या दिखाई देता है?

**दादाश्री :** ऐसा है, यह अंदर भी उसी तरह से अलग दिखाई देता है न!

**प्रश्नकर्ता :** यों दर्शन में क्या आता है उसे? एक उदाहरण बताइए न कोई।

**दादाश्री :** यह पत्थर अलग और मेरा हाथ अलग, ऐसा पता नहीं चलता हमें? फिर, ये पत्थर के गुण हैं और ये मेरे गुण हैं, ऐसा?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। पत्थर के गुणों को हर प्रकार से जानता है कि यह वज्जन वाला है, ठंडा है, चौकोर है...

**दादाश्री :** चिकना है।

**प्रश्नकर्ता :** तो, ये गुणधर्म मेरे नहीं हैं और ये गुणधर्म मेरे हैं, उसमें उसे किस तरह से रहना चाहिए?

**दादाश्री :** कि यह ठंडा मेरा नहीं है, यह चिकना मेरा नहीं है, यह गुस्सा हुआ वह मेरा नहीं है, कपट किया वह मेरा नहीं है, दया की वह मेरी नहीं है!

हम बिस्तर में सो जाएँ, तो क्या ऐसा पता नहीं चलता कि ‘मैं अलग हूँ’? पता चलता है?

**प्रश्नकर्ता :** वहाँ तो समझ में आता है कि बिस्तर और सोने वाला वास्तव में अलग ही हैं। लेकिन इसे यह आत्मा और यह पौद्गलिक अवस्था, ऐसे दोनों अलग हैं, वह जो जागृति में रहना चाहिए अथवा जो उपयोग जागृति रहनी चाहिए, वहाँ पर परेशानी है न?

**दादाश्री :** बिस्तर के बारे में कुछ जागृति है लेकिन आत्मा के बारे में तो जागृति खत्म ही हो चुकी है न! बिस्तर की बात उसे पता चलती है।

**प्रश्नकर्ता :** वह भी जब उसे याद दिलाएँ तब कहेगा, ‘हाँ, दोनों अलग हैं’।

**दादाश्री :** उसे तो जब प्रमाण सहित दूँ तब वह मानेगा।

**प्रश्नकर्ता :** तो ऐसा अंदर की चीजों में सभी ‘फेजिज़’ में ‘नहीं है मेरा और मैं शुद्धात्मा हूँ’, ऐसा समझने के लिए अथवा तो ऐसी यथार्थ जागृति में रहने के लिए इन सब प्रमाणों की ज़रूरत पड़ेगी न?

**दादाश्री :** प्रमाण तो मुख्य चीज़ है।

**प्रश्नकर्ता :** वे प्रमाण कौन-कौन से हैं, अंदर का समझने के लिए?

**दादाश्री :** जिसमें अनेक चीज़ें इकट्ठी होकर कार्य हो वह सारा ही अपना नहीं है। तीन ही चीज़ें मिली और कार्य हुआ तब भी अपना नहीं है। दो चीज़ें इकट्ठी होकर कार्य हुआ तो भी अपना नहीं है। आम को छुरी से नहीं काटा और दाँत से काटा। हाँ, वह इन सब के मिलने पर हुआ इसलिए वह अपना नहीं है! बारीकी से समझना पड़ेगा न? ऐसे स्थूल रूप से समझने से चलेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** मूल वस्तु तो सूक्ष्मतम है।

**दादाश्री :** हाँ, मूल वस्तु सूक्ष्मतम है और बात स्थूल करेंगे तो क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यह नई ही बात बताई।

**दादाश्री :** नई नहीं है, है ही पहले से यह! यह तो तीर्थकरों के पास था, पहले से ही था और आज भी है। आप अपने आपसे अपनी लॉ बुक से 'नया' कहो, तो उसका मैं क्या करूँ?

**ज्ञायकभाव में हैं,** तो नहीं बह सकते कभी भी

**प्रश्नकर्ता :** देखने और जानने में बहुत संघर्ष चलता है। अतः जो-जो संयोग मिलते हैं उनमें बह जाते हैं।

**दादाश्री :** वह जो बह जाता है, वह कौन बह जाता है? आप तो शुद्धात्मा हो। शुद्धात्मा कैसे बह सकता है? चंद्रूभाई नाम का पुद्गल बह जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** वह देखने-जानने में स्थिरता रहनी चाहिए न?

**दादाश्री :** नहीं, वह स्थिरता नहीं रहेगी। बल्कि स्थिरता रहने से तो परेशानी हो जाएगी। यदि सिनेमा की फिल्म स्थिर हो जाए तो क्या 'देखोगे' फिर? वह तो चलती ही रहनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, वह तो चलती रहेगी लेकिन यही कि हम उसके साथ चलने न लगें और हम स्थिर रहें।

**दादाश्री :** नहीं। आपको 'देखते' रहना है। 'देखने वाला' तो हमेशा स्थिर ही होता है। 'देखने वाला' कभी बह नहीं जाता। आप 'देखते' नहीं हो इसलिए उससे उल्टा अभ्यास हो जाता है। ज्ञायकभाव में रहे तो कभी भी बह नहीं जाओगे और भावनाओं के वश में हुआ कि बहा। भावनाओं

के वश में आने से तो लोग सिनेमा में भी बह जाते हैं। रोते हैं, हाँ! अरे! लेकिन जहाँ सिर्फ देखना ही था, वहाँ तू रोता क्यों है? जहाँ सिर्फ देखना ही है, वहाँ रोता है! रोता है न? और फिल्म यदि एक ही तरह की हो तो देखना अच्छा लगेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** अच्छा नहीं लगेगा, दादा।

**दादाश्री :** हं। फिल्म में कभी शादी होती है, कभी मारपीट होती है, कभी अपहरण होता है, तभी देखना अच्छा लगता है न! यदि पूरी फिल्म में लगातार शादी ही चलती रहे तो अच्छा नहीं लगेगा न? अतः यह पूरी फिल्म देखनी है। जिसमें ज़रा सा भी आनंद कम नहीं हो, वही अपना विज्ञान।

शक्ति तो पूर्ण है ही अंदर लेकिन अव्यक्त रूप से रही हुई है। अधूरी क्यों रहती है? क्योंकि हमें अभी भी यह सब अच्छा लगता है। फिर भी इस ज्ञान के बाद काफी कुछ कम हो गया है न? जैसे-जैसे कम होता जाएगा, वैसे-वैसे शक्तियाँ व्यक्त होती जाएँगी। 'अच्छा लगता है', तो उसका ऐसा अर्थ नहीं है कि उसका तिरस्कार करना है। लेकिन उसमें खुद तन्मयाकार हो जाता है, खुद भूल जाता है, खुद की शक्ति भूल जाता है और इसमें तन्मयाकार हो जाता है, तो उसका मतलब यह है कि वह पसंद है। खाओ-पीओ लेकिन तन्मयाकार मत हो जाना। देखो, सिनेमा देखने जाते हो तब उसमें कोई अच्छी स्त्री या पुरुष हो तो क्या उससे गले मिलते हो? और जब कोई किसी को मार रहा हो तब क्या वहाँ चिल्लाते हो कि, 'ए! क्यों मार रहा है?' 'मत मार', ऐसा कुछ कहते हो? मन में समझ जाते हैं कि देखना ही है, बोलना नहीं है।

वह फिल्म ऐसा नहीं कहती कि आप हमें

उठाकर लेकर जाओ साथ में। फिल्म तो कहती है कि देखकर चले जाओ। लेकिन अगर आप उल्टा करते हो तो उसमें बेचारी फिल्म क्या करे? लेकिन अगर खुद गोंद चुपड़कर जाए, तब फिर क्या हो सकता है? उस गोंद (राग-द्वेष) को धोकर जाना पड़ेगा। खुद गोंद चुपड़कर जाता है इसलिए फिर जो भी हो वह छूता है और चिपकता है!

**तन्मयाकार हो जाए, उसे जाने वह है आत्मा**

**प्रश्नकर्ता :** जिन संयोगों में तन्मयाकार हो जाते हैं...

**दादाश्री :** जो तन्मयाकार हो जाता है, वह भी तू नहीं है, शुद्धात्मा नहीं है। शुद्धात्मा तन्मयाकार हो ही नहीं सकता। वह तेरी भ्रामक मान्यता है, उस मान्यता के कारण तन्मयाकार हो जाता है। उसे जानो कि यह कितना तन्मयाकार हुआ है। एकदम तन्मयाकार हो गया है या थोड़ा-थोड़ा, कच्चा है या संपूर्ण एडजस्ट हो गया है? यह सब जानो। जानेगा तो तू छूट जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** यह बहुत अहम सवाल है। क्योंकि आपने कहा था कि ज्ञान प्राप्ति के बाद सभी निर्लेप हो जाते हैं। तो फिर हमें तो अभी ऐसे नहीं दिखाई देते कि निर्लेप हो गए हैं। हमें ऐसा दिखाई देता है कि ये लेपायमान हो गए, फिर वापस जुदा हो गए, फिर से लेपायमान हो गए, हमें ऐसा जो भान होता है, वह क्यों होता है?

**दादाश्री :** आप खुद लेपायमान हो जाते हो, ऐसा भान होता है, नहीं? वह भान, आत्मभान नहीं है। आत्मभान तो, जो कभी भी लेपायमान नहीं हो, उसे आत्मभान कहा जाता है। इसलिए आपको कहना है कि यह जगह अपनी नहीं है। अपनी जगह ऐसी वीरान नहीं है। अपनी तो

जायजेन्टिक है (भव्य)। यह वीरान जगह अपनी कैसे हो सकती है? क्या ऐसा पता नहीं चलेगा कि यह होटल अपनी नहीं है? हम किस जाति के हैं, उस हिसाब से अपनी होटल का पता नहीं चलेगा? सुगंध पर से समझ जाएँगे कि यहाँ बिरयानी वाली होटल है... यानी कि हम होटल के बारे में भी समझ जाते हैं। उसी तरह यह जो तन्मयाकार हो जाता है, वह भाव अपना नहीं है। अतः तन्मयाकार किस प्रकार से होता है, वह 'देखते' रहना है। संपूर्ण तन्मयाकार हो जाता है या आधा तन्मयाकार होता है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ। अर्थात् अलग-अलग डिग्रियों में तन्मयाकार हो जाते हैं!

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन अलग-अलग डिग्रियों को जो जानता है, वह आत्मा है। ऐसा है न, इतने सारे थर्मामीटरों का उपयोग होता है, लेकिन क्या किसी डॉक्टर के थर्मामीटर को कभी बुखार हुआ है? शुद्धात्मा थर्मामीटर के समान है। वह यह दिखाता है कि कितनी डिग्री का बुखार है। थर्मामीटर को कभी भी बुखार नहीं आता! वह तो बल्कि ऐसा है कि बुखार दिखाता है! लोग कहेंगे कि, 'भाई, बुखार को छूते-छूते इस थर्मामीटर को बुखार आ गया है'! 'अरे, इसे बुखार हो सकता है क्या?' डॉक्टरों को हो सकता है लेकिन थर्मामीटर को नहीं हो सकता। थर्मामीटर का मालिक जो है न, उसे हो सकता है, डॉक्टर को!

**प्रश्नकर्ता :** जब हम तन्मयाकार हो जाते हैं, उतने समय तक हमें शुद्धात्मा पद का भान नहीं रहता न!

**दादाश्री :** क्यों नहीं रहता लेकिन? (मानता है) 'मैं तन्मयाकार हो गया' इसलिए वह भान खो जाता है। किसी व्यक्ति ने शराब नहीं पी हो, फिर भी यों ही कहे कि, 'हाँ, मैंने तो आज शराब

पी है', तो उतने समय तक चढ़ जाएगी। यानी कि शराबी जैसे लक्षण दिखाई देंगे, नहीं पी हो फिर भी।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कितनी ही बार ऐसे लेपायमान हो जाते हैं न, तो पूरी तरह से ऐसा ही दिखाई देता है जैसे शराब पी हो! यही सवाल है न! तो फिर हम खुद को निर्लेप कैसे कहें?

**दादाश्री :** आपको समझ जाना है कि यह होटल अपनी नहीं है। तब फिर अन्य कौन सी होटल जो अपनी है, वह मिलेगी। दादा ने जो होटल बताई है, उसमें 'मैं निर्लेप हूँ, शुद्ध ही हूँ। मुझे ऐसा कैसे हो सकता है?'

दृश्य और द्रष्टा एक नहीं हो सकते। तन्मयाकार हो गए हैं, वह दृश्य है और दृश्य खुद कभी नहीं समझ सकता कि, 'तन्मयाकार हो गया हूँ'। उसे तो द्रष्टा ही जान सकता है। जाना किसने? तब कहते हैं, द्रष्टा ने। आप खुद द्रष्टा हो! फिर भी 'खुद' को पता नहीं चलता। कैसा आश्वर्य है!

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कुछ होता है, जिससे कि हम दृश्य का भाग बन जाते हैं। हमारा द्रष्टापन उस समय कहाँ चला जाता है?

**दादाश्री :** नहीं। ऐसा है न, आप तो लेबोरेटरी में पढ़े हो, तो क्या चार ही घंटों में आप पढ़ लेते हो पूरा?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** एक बार प्रयोग करवाने के बाद, अगर फिर से करते हो, तब अंदर कितनी ही, कुछ की कुछ चीज़ें डाल देते हो। तो यदि उसमें इतना समय लगता है, तो यह तो, यहाँ टाइम तो लगेगा न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उस समय 'मैं' द्रष्टा के

रूप में साथ में बैठा हुआ होना चाहिए न, 'देखने वाला?' वह देखने वाला अंदर उलझ जाता है।

**दादाश्री :** नहीं, वह तो अलग ही बैठा रहता है। एकाकार हो गया, ऐसा आपको लगता है, ऐसा भासित होता है, परंतु ज़रा प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। प्रैक्टिस किए बिना कैसे चलेगा? और यदि एकाकार हो गया होता तो जुदा नहीं हो पाता, जुदा कैसे करेगे वापस? वापस एकाकार हो ही नहीं सकता। यह तो, दोनों के स्वभाव अलग हो गए हैं न! अपने-अपने स्वभाव में आ गए!

### शुद्धात्मा के स्वभाव को पकड़कर रखने से, होते हैं असंग

मैंने आपको जो आत्मा दिया है, वह असंग ही दिया है। देह का निरंतर संग होने के बावजूद असंग ही है। आत्मा को कुछ स्पर्श भी नहीं करता और कुछ बाधक भी नहीं है। अतः उस रूप से रहना, निर्लेप, असंग! अग्नि का संग भी उसे स्पर्श नहीं करता, तो इस दुःख का, शरीर का कैसे स्पर्श करेगा? अतः उसके इस स्वभाव को पकड़कर रखना है।

अब, जैसे हम शुद्धात्मा बन गए हैं, उस शुद्धात्मा को कुछ भी स्पर्श कर सके, ऐसा है ही नहीं। उसका स्वभाव ही निर्लेप है। स्वभाव से वह असंग ही है। स्वभाव से ही है, तो फिर भला हम उसे कहाँ असंग बनाने जाएँ? जो स्वभाव से ही असंग है!

ज्ञान देने के बाद, एक बार निर्लेप हो जाने के बाद फिर लेपायमान नहीं हो सकता, असंग होने के बाद फिर संगी नहीं हो सकता। डॉक्टर ने कहा हो कि दाहिने हाथ को पानी मत लगने देना फिर भी अनादिकाल के परिचय के कारण छू लेता है। उसी प्रकार इस अनादिकाल के परिचय

की बजह से कुछ हो जाए तो बोलना है, ‘हम निर्लेप हैं, असंग हैं’ तो असंग हो जाओगे।

बुखार भले ही आया हो, उससे आत्मा को कुछ नहीं होगा। संग में रहने के बावजूद खुद तो असंग ही है। खुद तो ज्ञाता-द्रष्टा, शुद्ध भाव में ही है। जैसा संग वैसा रंग लगता है। आत्मा ‘असंग’ है। तू ‘असंग’ है तो तुझे रंग नहीं लगता, ‘चंदूभाई’ को लगता है। ‘आपको’ तो सिर्फ़ ‘जानते’ रहना है।

यह ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, वह सबसे बड़ा पद आपको मिला है लेकिन अब संपूर्ण निर्लेप और संपूर्ण असंग होना है। ये निर्लेपता और असंगता, ये दो सबसे अंतिम स्टेशन हैं।

### जहाँ जागृति डिम वहाँ असरें शुरू

**प्रश्नकर्ता :** संपूर्ण निडरता नहीं आ पाती। निर्लेपता नहीं है इसलिए उतनी निडरता नहीं है। ज़रा कम है।

**दादाश्री :** बाहर चाहे हम जितना भी देखें लेकिन अंदर असर नहीं हो, उसे निर्लेपता कहते हैं। क्योंकि आप शुद्धात्मा हो, शुद्धात्मा पर किसी प्रकार का असर नहीं होता। क्योंकि वह इफेक्टिव नहीं है। लेकिन जहाँ पर ज़रा इफेक्ट हो जाता है न, वहाँ पर आपकी जागृति ज़रा कच्ची पड़ जाती है। वहाँ पर आपको ऐसा करना चाहिए कि, ‘चंदूभाई, आप क्यों सिर पर लेते हो या आपको क्या लेना-देना है इसमें?’? बस, इतना ही कह देना चाहिए। तो जुदा हो जाएगा। आपको इतनी ‘जागृति’ रखनी चाहिए। या फिर दूसरा और कुछ समझ में नहीं आए तो ‘मेरा स्वरूप नहीं है’, ऐसा कहकर भी छूट जाना।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, ऐसा ज्ञान तो फिर हज़िर रहता है। यह मैं इसमें कहाँ पड़ा, यह रिलेटिव है।

**दादाश्री :** लेकिन फिर भी हो जाता है। हो जाए तब रिलेटिव कहने के बजाय ‘मेरा स्वरूप नहीं है’ कहने से सब अलग हो जाएगा। हमने क्या कहा है कि, ‘यह तेरा स्वरूप है और यह नहीं है’। तो अब आप यह ‘मेरा नहीं है’ कहोगे तो अलग हो जाएगा। फिर तो उससे चिपकेंगे ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** चीज़ों में जितनी तन्मयता है, उतना कच्चापन ही है न?

**दादाश्री :** हाँ, वही तो! अतः अब, तन्मयता का और कोई कारण नहीं है। सिर्फ़ जागृति मंद हो जाती है। जागृति मंद क्यों? तो कहते हैं, कि पहले के अभ्यास के कारण। अतः यदि इसमें आप ज़रा ज़्यादा जागृति रखोगे तो तुरंत

शांत हो जाएगा, अलग हो जाएगा। मैं तो चाहे कितनी भी खराब तबीयत हो और लोग कहें कि, ‘आज तो दादा, आपकी तबीयत बीक (कमज़ोर) है’। तो हम कहते हैं, ‘मुझे कुछ नहीं हुआ है। क्या होना है अब?’

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** मैं कितने शहर घूमता हूँ लेकिन कुछ भी नहीं होता। क्या होना है? यदि आप कहोगे कि मुझे हुआ, तो वह चिपक जाएगा!

### शुद्धात्मा का चिंतवन

आत्मा का स्वभाव कैसा है? अचिंत्य चिंतामणि है। अतः जैसा चिंतन करता है, तुरंत ही वैसा हो जाता है!

आत्मा कल्पस्वरूप है। अतः जब उसका लाइट बाहर गया तो फिर अहंकार उत्पन्न हो गया। वह खुद चिंतवन नहीं करता है, लेकिन जैसे ही अहंकार का आरोपण होने पर चिंतवन होता है, तब वैसे ही विकल्प उत्पन्न हो जाते हैं!

आत्मा खुद अनंत शक्ति वाला है! सभी प्रकार की शक्तियाँ अंदर से निकलें, ऐसी हैं। जितनी शक्तियाँ निकालना आएँ, उतनी आपकी। लेकिन एक बार उस अनंत शक्ति का भान हो जाना चाहिए! यह तो उल्टा चिंतवन करता है, इसलिए उलझन खड़ी होती है। एक बार शुद्धात्मा का चिंतवन प्राप्त हो जाए तो उसके बाद वह अपने आप ही रहेगा, खुद को कुछ भी करना नहीं पड़ेगा। आप जहाँ जाओ, वहाँ पर आपको शुद्धात्मा का चिंतवन होता ही रहता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** यह ज्ञान है ही क्रियाकारी! ऐसा लाखों वर्षों में कभी हुआ ही नहीं!

**प्रश्नकर्ता :** पागल आदमी ‘मैं समझदार हूँ’, ऐसा चिंतवन करे तो वह क्या समझदार हो जाएगा?

**दादाश्री :** हाँ, ऐसा करे तो वह समझदार होता जाएगा। यह तो अंदर असर हो चुका है, ‘साइकोलॉजिकल इफेक्ट्स’। हम तो एक भी असर अंदर होने ही नहीं देते।

**प्रश्नकर्ता :** लोग कहते हैं कि ‘आप ऐसे हो, आप वैसे हो’, तो उसका क्या?

**दादाश्री :** लोग भले ही कुछ भी कहें, लेकिन आप पर उसका असर नहीं होना चाहिए कि ‘मैं ऐसा हूँ’। आप को तो ‘मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ’ बस इतना ही रहना चाहिए।

आत्मा का कोई भी चिंतवन बेकार नहीं जाता। इतना अच्छा है कि चिंतवन स्थूल स्तर पर ही होता है, इसलिए चल जाता है। उच्च प्रकार के चिंतवन में एक मिनट में पाँच हजार ‘रिवोल्यूशन’ होते हैं। हर एक का चिंतवन अलग-अलग होता है, ऐसे अनंत प्रकार के चिंतवन हैं।

इसीलिए तो इस जगत् में तरह-तरह के लोग दिखाई देते हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** चिंतवन किसे कहते हैं?

**दादाश्री :** आप ये सभी क्रियाएँ करते हो, उसे चिंतवन नहीं कहा जाता, आप सोचते हो उसे नहीं कहते। चिंतवन तो, आपने जो आशय मन में तय किया हो, उसे कहते हैं। मन में एक आशय तय किया हो कि एक बंगला, एक बगिया, बच्चों को पढ़ाना है, ऐसा सब चिंतवन करे तो वह वैसा बन जाता है। ‘रिश्वत के रूपये लेने में कोई हर्ज नहीं है’, ऐसा चिंतवन करे तो वह वैसा बन जाता है। यह जो दिखाई देता है, वह जैसा चिंतवन किया था, उसीका फल है। ‘जैसा निदिध्यासन करे, आत्मा वैसा ही बन जाता है।’ कुछ लोग ऐसा चिंतवन करते हैं कि ‘मेरा आत्मा पापी है’। तो कौन-से गाँव जाएगा?

**प्रश्नकर्ता :** आत्मतत्व का चिंतवन तो मनुष्य को करना ही चाहिए न?

**दादाश्री :** हाँ, करना चाहिए। जब तक ‘ज्ञानी पुरुष’ उसे सचेतन नहीं बना देते, तब तक वह चिंतवन शुद्ध चिंतवन नहीं माना जाता, लेकिन शब्द से चिंतवन करता है। वह एक प्रकार का उपाय है। रास्ते में जाते हुए बीच का स्टेशन है वह।

बाहर के संयोगों के दबाव से आत्मा में कंपनशक्ति उत्पन्न होती है, तब परमाणु ग्रहण करता है। कंपनशक्ति एक घंटे के लिए बंद हो जाए तो मोक्ष में चला जाएगा! ‘मैं डॉक्टर हूँ, मैं स्त्री हूँ और दादा पुरुष हैं’, ऐसा समझेंगे तो कभी भी मोक्ष नहीं होगा। ‘खुद आत्मा है’, ऐसा समझेंगे तभी मोक्ष होगा।

**शुद्ध चिंतवन से शुद्धात्मा की प्रतीति**

**प्रश्नकर्ता :** सिर्फ चिंतवन से (चार्ज) प्रतिष्ठित आत्मा क्या शुद्धात्मा हो जाएगा?

**दादाश्री :** हाँ, इसलिए तो मैं आपसे कहता हूँ कि आप शुद्धात्मा हो गए। अतः यदि आप ‘मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ’, ऐसा करते रहेगे, तो उस रूप होते जाओगे।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन जब ही चुके हैं तो फिर ‘शुद्धात्मा हूँ’, ऐसा करने की क्या ज़रूरत है?

**दादाश्री :** हाँ, वह तो अभी आपको शुद्धात्मा की प्रतीति बैठी है। प्रतीति बैठी है इसलिए आपको ये जागृति रहेगी ही। वह खुद जैसा चिंतवन करेगा वैसा होता जाएगा। इस चिंतवन को चिंतवन कहते हैं और उस चिंतवन को साइकोलॉजिकल इफेक्ट कहते हैं, अज्ञानी के चिंतवन को। क्योंकि वह मानसिक अवस्था है। इसमें मानसिक नहीं है, यह तो चिंतवन है।

यह तीर्थकरों की खोज है। तू शुद्धात्मा, तू शुद्ध ही है, वर्ना, अन्य चिंतवन करेगा तो वैसा हो जाएगा। इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपने आपका शुद्ध ही चिंतवन करना, कि मैं तो शुद्ध ही हूँ, मैं शुद्ध ही हूँ। चंदूभाई कुछ हर्ज नहीं है, कहना। आपको जैसे दखल करना हो वैसे करना, हम तो शुद्ध ही है, कहना।

### उल्टा-सीधा वही है पौद्गलिक भाव

**प्रश्नकर्ता :** उल्टे संयोगों में चेतन भाव पौद्गलिक भाव में चला जाता है। बाद में जागृति आती है कि पौद्गलिक भाव में चले गए हैं, तो ऐसे में जागृति के लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** ऐसा है न, शुद्धात्मा और संयोग, दो ही हैं। उनमें से कोई उल्टा भी नहीं है, सीधा भी नहीं है। संयोगों को हम उल्टा कहते हैं तब उल्टा होता है, और सीधा कहें तब सीधा हो जाता है। कड़वा और मीठा, ये दो तो रहेंगे ही

लेकिन इसे कड़वा कहेंगे तो कड़वा लगेगा, उस समय उसका इफेक्ट होगा। कड़वा-मीठा तो रहेगा ही न? हर एक का अपना स्वभाव है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि उल्टा या सीधा देखने से पौद्गलिक भाव आ जाता है।

**दादाश्री :** उल्टा-सीधा, वही पौद्गलिक भाव है। उल्टा है ही नहीं। यह जो दिखाई देता है, वही अभी कमी है। संयोग हैं, और फिर वियोगी स्वभाव वाले हैं। कोई कहे कि, ‘साहब, यहाँ अंगारे रखे हुए हैं और इस तरफ बर्फ रखा हुआ है। तो दोनों में अंतर नहीं है? तो कहेंगे, अंतर है, दोनों संयोग हैं। लेकिन अच्छा-बुरा कोई है ही नहीं, और फिर वियोगी स्वभाव वाले हैं। यहाँ पर बर्फ रखा होगा न, तो उसे कोई नहीं हटाएगा। यहाँ पर अंगारे पड़े हुए होंगे तो यदि मैं नहीं हटाऊँगा तो कोई और हटा देगा। यानी कि वे संयोग अपनी जगह खाली करने के लिए आए हैं। तो फिर आपको धीरज तो रखना पड़ेगा न! भगवान ने तप करने का कहा है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप। वह उल्टा नहीं है, आपके तप करने में कमी है। चार स्तंभ तो पूरे करने ही पड़ेंगे न? तीन स्तंभ (पैर) का पलंग हो तो एक तरफ गिर ही जाएगा न! चार पैरों वाला पलंग होना चाहिए।

इसीलिए लिखा है न, कि दादा अदीठ तप करते हैं। अदीठ तप, वह अंतिम तप है। हम अंतिम तप करते रहते हैं। आत्मा और अनात्मा, दोनों के संधि-स्थल पर, अनात्मा की तरफ जाते ही नहीं हैं। फॉरेन डिपार्टमेन्ट में जाते ही नहीं हैं, होम डिपार्टमेन्ट में ही रहते हैं। वहाँ पर तप रखना है, वह अदीठ तप है। तो आपको, इस तप में से तपते-तपते फिर आगे जाकर अदीठ तप तक पहुँचेगा।

**आक्षेप में, शुद्धात्मा में रहकर तप करना है**

**प्रश्नकर्ता :** अदीठ तप करें, तो सम्भाव से निकाल हो गया, ऐसा कहा जाएगा न?

**दादाश्री :** सारा निकाल हो गया। उसमें यदि रिश्त लेंगे तो वहाँ ज़रा बाकी रह जाएगा, जितनी रिश्त लेते हो उतना बाकी रहा। और निकाल किया यानी वह चला गया। उस क्षण आत्मा हल्का हो जाता है और आनंद ही रहता है। बहुत तप जाने पर क्या करते हो? शोर मचा देते हो? ऐसे कलह किया था? किसी का गुस्सा किसी पर निकालते हैं फिर। जो भी फाइल हो, उस फाइल का आमने-सामने ही निकाल कर देना। किसी और फाइल का और उसका कनेक्शन नहीं, वर्णा किसी का गुस्सा किसी ओर पर निकालोगे।

‘उसमें’ से अलग रखना है ‘आपको’। एकाकार होने लगे, यों तो खुद अलग रहता है लेकिन यदि कोई कहे कि, ‘आपने हमारा पाँच हजार का नुकसान कर दिया’, ऐसा कहे तो उस समय एकाकार हो जाता है। उस समय तप करना चाहिए। उस समय झटका लगता है कि, ‘मैंने तो नहीं किया है’। झटका क्यों लगता है? मन में ऐसा लगता है कि इसने मुझ पर आरोप लगाया। इसलिए फिर, ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, रहेगा या वह रहेगा? उस समय तप करके फिर, ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ रहना चाहिए।

**शुद्धात्मा हुए तभी से अहंकार पर संयम**

**प्रश्नकर्ता :** दादा, अंदर तपने पर क्या पहले तप उत्पन्न होता है, उसके बाद में संयम उत्पन्न होता है?

**दादाश्री :** संयम तो, जब से आप शुद्धात्मा हुए और चंदूभाई छूट गए, तभी से संयम की शुरुआत हो गई।

**प्रश्नकर्ता :** तप भी संयोग आए तब उत्पन्न होता है न?

**दादाश्री :** तब तप उत्पन्न होता है लेकिन इस संयम की शुरुआत तो हो चुकी है। सभी संयमी ही कहे जाएँगे। बाकी, इस संयम की शुरुआत तो यहीं से हो गई है, ज्ञान दिया तभी से संयमी।

क्रोध-मान-माया-लोभ पर संयम रखना, उसी को संयम कहते हैं। क्योंकि पूरा जगत् क्रोध-मान-माया-लोभ से बंधा हुआ है और वे कथाय ही उसे दुःख देते हैं, निरंतर। भगवान कहीं दुःख नहीं देते। अतः जब क्रोध-मान-माया-लोभ पर संयम होता है तब वह संयम कहलाता है। जब अहंकार पर संयम होता है तब संयम कहलाता है। अहंकार पर संयम कब होता है, कि जब ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, ऐसा भान हो जाता है, तब। तब तक संयम होता ही नहीं न!

**अब आएगा मोक्ष सामने**

शुद्ध उपयोग रहना चाहिए, बस! जितना हो सके उतना, एज़ फॉर एज़ पॉसिबल। उसके लिए फिर रात को चिंता नहीं करनी है, सो जाना है आराम से। यानी मेरा कहना ऐसा है कि रातों को जागने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन हम पुरुष बने हैं इसलिए ज़रा ज्यादा पुरुषार्थ रखना है, ऐसा निश्चय-निर्णय होना चाहिए कि, ‘मुझे अब शुद्ध उपयोग रखना ही है’। फिर अगर नहीं रह पाए तो वह सब निकाली है। और हमें कोई जल्दबाजी करने की ज़रूरत नहीं है, बदहवास नहीं होना है, मोक्ष सामने से आएगा। हमें वहाँ पर जाने की ज़रूरत नहीं है। गाड़ी में बैठे हुए व्यक्ति के पास स्टेशन अपने आप ही आएगा, बड़ौदा। तू अपनी जगह पर ही बैठा रहना।

**प्रश्नकर्ता :** गाड़ी में बैठ ही गए हैं न, अब तो हम!

**दादाश्री :** हाँ, इसीलिए तो कह रहा हूँ न! मेरा कहना यह है कि वह आ ही जाएगा। इन आज्ञाओं का पालन करना है और कुछ नहीं, हमें मोक्ष की चिंता करने की ज़रूरत ही नहीं है। आज्ञा की यह टिकट ऐसी है कि वहीं पर ले जाएगी।

**प्रश्नकर्ता :** आज्ञा समझनी हैं, दादा।

**दादाश्री :** हाँ, वह सब समझना तो है ही न! समझने की ही तो ज़रूरत है। समझे ही हैं न, कई लोग समझ गए हैं। लेकिन कुछ लोगों में कमी है समझने की।

**मोक्ष की गाड़ी में बैठने के बाद जल्दबाजी?**

**प्रश्नकर्ता :** कभी मोक्ष में जाने की बहुत ही जल्दबाजी रहती है!

**दादाश्री :** यदि जल्दबाजी करोगे तो ठोकर खाओगे। मोक्ष मिलने के बाद में मोक्ष की क्या जल्दी? जल्दी किसलिए? कोई आपका रिजर्वेशन ले लेगा क्या? रिजर्वेशन को कोई भी नहीं छू सकता! जिस जगह जाना हो उसका निश्चय, उसकी टिकिट, सबकुछ हो चुका है! किसी से पूछ लेना कि गाड़ी कैसी है? तब कहेंगे, 'स्पीडी'। फिर बैठकर सो जाना है!

कोई व्यक्ति बड़ौदा से मुंबई जाने के लिए गाड़ी में बैठे और खिड़की से बाहर देखता रहे, कि मुंबई दिखाई दिया... तो कब अंत आएगा? ये लोग क्या कहते हैं? भाई क्या देख रहे हो? तो कहते हैं, 'दिखाई दे रहा है क्या मुंबई? ज़रा पता लगाओ न'! 'अरे, भाई सो जा न! पागल है क्या?' पत्नी भी ऐसा कहती है कि 'यह मूर्ख है। आपसे कहाँ शादी कर ली मैंने?' कोई ऐसा करता है? अरे, कई लोग गाड़ी में भागदौड़ करते हैं। क्यों? 'जल्दी पहुँचना है। हमारे रिश्तेदार बहुत

बीमार हैं। सुबह वहाँ से निकलकर अस्पताल जाना है'। अरे भाई, यहाँ पर क्यों भागदौड़ कर रहा है, इस तरह भागदौड़-भागदौड़? बिना बात के अरे, खुद नहीं सोता और लोगों को भी नहीं सोने देता। अरे भाई, उतर जाए तब जाना। सब से पहले तू जाना, लेकिन आराम से सो जा न, अभी।

इस ज्ञान से तो आपकी दूज (आत्मज्ञान) हो गई है। अब जैसे-जैसे आज्ञा में रहोगे, वैसे-वैसे फिर पूनम होगी।

**प्रश्नकर्ता :** पूनम (केवलज्ञान) करने की उत्कंठा तो होनी चाहिए न, कि जल्दी से हो!

**दादाश्री :** जल्दी की बात नहीं है। आपको आज्ञा पालन करते रहना है, बस। आप अधिक आज्ञा पालन करो, उसी के परिणाम स्वरूप पूनम आएगी। इससे तो फिर पूनम भी रूठ जाएगी कि, 'ओहोहो! देखो, मेरे बिना इन्हें अच्छा नहीं लगता'! तेरे बिना सब अच्छा लगता है, तू अपने आप आ! हम तो ये चले, वह सामने से आएगी। जो पद सामने से आए, उसकी उत्कंठा कैसी? मोक्ष भी सामने से आ रहा है और सबकुछ सामने से आ रहा है। हमें तो अपने आप, दादा जो कहते हैं उस अनुसार कार्य करते जाना है, बस। अन्य किसी झंझट में नहीं पड़ना है। आगे जाने लगेंगे तो फिर बोझ बढ़ जाएगा। भला फिर उसका बोझ कौन लेगा, बिना बात के?

**प्रश्नकर्ता :** क्यों दादा, उसके लिए तीव्रता नहीं होनी चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं, तीव्रता तो इन पाँच आज्ञा में रहने के लिए ही रखनी है। वह जो कार्य है, उसके लिए नहीं रखनी है। कारण के लिए तीव्रता रखनी है, कार्य तो फल है। फल के लिए तीव्रता

रखकर, लोग कारण में कमज़ोर रह जाते हैं। कार्य बड़ा है या कारण?

**प्रश्नकर्ता :** कारण बड़ा है, दादा। लेकिन लक्ष के लिए तीव्रता के बारे में बताइए।

**दादाश्री :** वह तो रहेगी ही। वह तो कम होगी ही नहीं। हम जब यहाँ घर से रास्ते पर जाते हैं न, तो सीढ़ियाँ उतरकर नीचे जाना है, उस बात को याद रखने की ज़रूरत नहीं है। हमें सिर्फ अगली सीढ़ी देख-देखकर चलना है ताकि गिर न जाएँ, बाकी पहुँचेंगे तो नीचे ही।

**पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ किसका?**

पुरुषार्थ किसका करना है? पुरुष होने के बाद, 'शुद्धात्मा' का लक्ष बैठने के बाद पुरुषार्थ और स्व-पराक्रम होता है।

अंदर निरा भूलों का ही भंडार भरा है। हर क्षण दोष दिखाई दें तब काम हुआ कहा जाता है। यह सारा माल आप भरकर लाए हैं, बिना पूछे ही न?

शुद्धात्मा का लक्ष बैठ जाने से भूलें दिखती हैं। अगर नहीं दिखें, तो वह तो निरा प्रमाद कहलाता है।

खरी कसौटी में ज्ञान हाजिर रहे, कान काट रहे हों और ज्ञान हाजिर रहे, तब सही कहलाएगा। नहीं तो सब प्रमाद कहलाता है।

जानी पुरुष तो एक ही घंटा सोते हैं। निरंतर जागृत ही रहते हैं। आहार कम हो गया हो, नींद कम हो गई हो, तब जागृति बढ़ती है। वर्ना तो प्रमादचर्या रहती है। नींद बहुत आए, वह प्रमाद कहलाता है। 'प्रमाद यानी आत्मा को गठरी में बाँधने जैसा है।'

भूल का अर्थ क्या है? इसका खुद को

भान ही नहीं है। स्व-पराक्रम से भूलें खत्म होती हैं।

जब नींद घटे, आहार घटे, तब समझना कि प्रमाद घटा।

जब भूलें नष्ट होने लगती है, तब उनके चेहरे पर चमक आती है, वाणी सुंदर निकलती है, लोग उनके पीछे घूमते हैं।

**स्ट्रोंग परमाणु वाली भूलें हों तो, वे तुरंत दिखाई देती हैं।** कोई व्यक्ति बहुत कड़क हो तो, वह जिस तरफ जाए, उसी में डूब जाता है। संसार में घुसा, तो उसमें डूब जाता है और ज्ञान में आया, तो उसमें डूब जाता है।

आत्मा का शुद्ध उपयोग अर्थात् क्या? इसका अर्थ यह है कि आत्मा को अकेला नहीं छोड़ सकते। जैसे पंद्रह मिनट झपकी लेनी हो, तो पतंग की डोर अँगूठे से बाँधकर झपकी लेते हैं, उसी प्रकार आत्मा के बारे में ज़रा सी भी अजागृति नहीं रखी जा सकती।

**झोंका खाया, वह नुकसान**

**प्रश्नकर्ता :** दादा से मिलने के बाद, ज्ञान मिलने के बाद अजागृत रहें तो कितनी जोखिमदारी है?

**दादाश्री :** जितने झोंकें आते हैं उतनी और यदि झोंकें नहीं आएँ तो उतनी। देखे बगैर गया उसका जोखिम रहेगा। वह फिर से देखना पड़ेगा। देखोगे तो साफ हो जाएगा। देखने से हर एक उदय साफ हो जाता है। अगर उदय में तन्मयाकार रहे तो वे कर्म शुद्ध होने बाकी रह जाएँगे और आत्मा अलग होने के बाद फिर आत्मा की जागृति में रहा तो कोई हिसाब नहीं बंधता। जागृति मंद रहे उतने समय तक उसे वह चिपकेगा।

**प्रश्नकर्ता :** क्या चिपकेगा?

**दादाश्री :** चिपकेगा अर्थात् जो हिसाब उसे साफ करना है न, उतना साफ नहीं किया तो फिर वह वैसे का वैसा पड़ा रहेगा न!

**प्रश्नकर्ता :** वह साफ नहीं होगा, लेकिन नया नहीं बिगड़ेगा न?

**दादाश्री :** नये से लेना-देना ही नहीं है न!

**प्रश्नकर्ता :** इन्हीं को शुद्ध करके भेजना है न!

**दादाश्री :** इन्हीं को शुद्ध करके भेजना है लेकिन वे नहीं भिजवाए इसलिए उतने अपने पास जमा रहेंगे।

### **जहाँ निष्पक्षपातीपन वहाँ यथार्थ पुरुषार्थ**

पुरुषार्थ तो, पुरुष हुए बगैर पुरुषार्थ हो ही नहीं सकता। जैसे ही जागृत हुआ तो खुद की भूलें दिखाई देने लगीं, निष्पक्षपाती रूप से दिखाई देने लगा। चंदूभाई का एक-एक दोष समझने लगते हैं, तब से निष्पक्षपातीपन होता है। तब जजमेन्ट पावर आता है और उसके बाद असल पुरुषार्थ होने लगता है।

आपके वाणी, वर्तन और विनय में कोई अंतर आता है या नहीं, वह भी आपको स्टडी करते रहना चाहिए। वाणी कुछ-कुछ बदलती जा रही है या नहीं? दादा जैसा बनना ही पड़ेगा न? तभी मोक्ष में जा पाएँगे। मोक्ष में तो एक ही तरह की क्वॉलिटी है न? पूरे सौ प्रतिशत है न? उसमें कहीं दस प्रतिशत चल सकता है क्या? अतः यह पूरा ही शुद्धिकरण का मार्ग है।

यदि मोक्ष में जाने की कोई भावना होगी, जो कुछ प्राप्त करने की भावना होगी न, तब वृत्ति उसमें तन्मयाकार रहेगी, यानी कि उस तरफ की तीव्रता होनी चाहिए। तीव्रता अर्थात् खुद का ज़बरदस्त पुरुषार्थ होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** दादा के पास आने के बाद यह पक्का हो गया है कि अब, ये देहधारी परमात्मा हैं इसलिए फिर यदि उसका तीव्र पुरुषार्थ होगा तो...

**दादाश्री :** बस! तो बहुत हो गया। वह छूट जाएगा, अन्य कोई तकलीफ नहीं है। नुकसानदायक नहीं है और संसार चल सके, उसके लिए ओलंबो (साहुल, भूलंब) दिया है। क्योंकि तब तक संसार चलाने की चिंता रहती थी। लेकिन यह ओलंबो दे दिया है कि वह भी व्यवस्थित चला लेगा। सारा कुछ ओलंबो सहित दिया है। तो किसी भी तरह की वरीज़ (चिंता) रखे बिना सबकुछ दे दिया है जबकि क्रमिक मार्ग में तो फिर घर चलाने की परेशानी, बिज़नेस चलाने की परेशानी और फिर भविष्य की चिंता। इसमें तो भविष्य की चिंता-विंता कुछ भी नहीं है। भूतकाल गाँन, भविष्यकाल व्यवस्थित के ताबे में है इसलिए आप निरंतर वर्तमान में रह पाते हो। ऐसा मौका नहीं मिलेगा। मुफ्त में, बिना मेहनत के मोक्ष!

### **दादा की अनुपस्थिति में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा**

**प्रश्नकर्ता :** पहले मुझे खुद की भूलों जैसा कुछ दिखाई नहीं देता था। अब तो ढेरों दिखाई देती हैं। गोडाउन के गोडाउन भरे हुए हों, ऐसा लगता है।

**दादाश्री :** ऐसा! माल से गोडाउन भरे हुए हैं न! उसमें हर्ज नहीं है। दादा के पास आते हो और जब तक दादा का आशीर्वाद है, तब तक किसी तरह की परेशानी नहीं होगी। सिर्फ अपने मन में ऐसी भावना करो कि यह छूटे तो अच्छा, छूटे तो अच्छा, सारा माल खाली हो जाए तो अच्छा।

जब तक दादा हैं तब तक सबकुछ हो

सकता है, उसके बाद बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा। उनकी अनुपस्थिति में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा। जब तक वे हैं, तब तक यदि आप इनके पास विधियाँ करोगे, सत्संग करोगे तो इस सारे माल को नष्ट कर देंगे। दादा को देखने मात्र से ही कितने दोष खत्म हो जाते हैं! सिर्फ दर्शन करने से ही कितने ही दोष खत्म हो जाते हैं!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, आपको सभी महात्माओं का हर तरह से ठीक करके जाना है। यों ही अगर हमें रास्ते पर भटकता हुआ छोड़कर चले जाएँगे तो नहीं चलेगा न?

**दादाश्री :** आप सब को तय करना है कि जब सभी एक स्टेशन पर आकर बैठ जाएँ तब ऐसा कहना, 'जाइए दादा'। जब तक सब यों भटक रहे हों तब तक सब को आवाज़ देकर बुला लेना 'आ जाओ, यहाँ पर! सब इकट्ठे हो जाओ', ऐसा कहना।

हम देखते हैं कि जहाँ-जहाँ जिसने सच्चे दिल से पुरुषार्थ शुरू किया है, उस पर हमारी कृपा अवश्य बरसती ही है। आपने यदि आगे कदम बढ़ाया है और सच्चे दिल से पुरुषार्थ करना शुरू कर दिया है तो हमारी कृपा बरसेगी ही। कोई ज़रा कमज़ोर पड़ जाए तो फिर हम वहाँ से उठकर दूसरी जगह पर चले जाते हैं। हम कहाँ बैठे रहें? वह कमज़ोर पड़ जाए तो हम कहाँ बैठे रहें?

**प्रश्नकर्ता :** कमज़ोर पड़ जाए तो उसे आपको आगे लाना चाहिए न?

**दादाश्री :** वह करके देखते हैं लेकिन वह फिर से कमज़ोर पड़ जाए तो हम हट जाते हैं। बाकी के जो लोग चल रहे हैं, उनका देखना होगा न! कमज़ोर पड़े ही क्यों? खुद की स्थिति कमज़ोर

नहीं पड़नी चाहिए। सामने आगर कोई अड़चन आ जाए तो वह अलग बात है, लेकिन खुद को तो स्ट्रोंग ही रहना चाहिए।

ज्ञानी के पीछे घूमते रहते हैं, तो कुछ निबेड़ा तो आएगा न?

### आप सभी हम से लिपटे रहना

**प्रश्नकर्ता :** आपने वह उदाहरण बहुत अच्छा दिया था कि यह जो बिल्ली होती है न, वह बच्चों को ऐसे मुंह में लेकर जाती है जबकि बंदरिया के बच्चे तो उससे चिपक जाते हैं।

**दादाश्री :** चिपक जाते हैं, छोड़ते नहीं है। क्योंकि बंदरिया पंद्रह फुट ऊँचा कूदे तब भी बच्चा तुरंत ही आँख मींचकर चिपका रहता है। वह बच्चा समझता है कि 'आपकी जिम्मेदारी नहीं है, मेरी ही जिम्मेदारी है,' इस तरह चिपक जाता है। इस तरह से चिपक जाता है कि अगर बंदरिया गिर जाए तब भी उसे कुछ नहीं होता। ऐसा सीख लेना है। पकड़ पाओगे न?

**प्रश्नकर्ता :** उसी तरह पकड़ना है दादा को।

**दादाश्री :** अभी तो जब पकड़ोगे, तब न?

**प्रश्नकर्ता :** पकड़ा हुआ ही है दादा को।

**दादाश्री :** पकड़ा है? आपने भी पकड़ा है न, दादा को? आपको मुझसे लिपट जाना है, मुझे आपसे नहीं लिपटना है। बिल्ली को अपने बच्चों को मुंह में पकड़कर ले जाना पड़ता है, और बंदरिया को? फिर बच्चे 'माँ' को छोड़ते ही नहीं हैं। वह ऐसे कूदती है तो बच्चा उस तरफ नहीं कूदता, सिर्फ पकड़े रहता है! आप सभी बंदरिया के बच्चे की तरह हम से लिपटे रहना।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य अडालज में सत्संग कार्यक्रम

PMHT (पेरेन्ड्रस महात्मा) शिविर - वर्ष 2023

3 से 7 मई - सत्संग शिविर

**सूचना :** 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) शिविर में, पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार, माता-पिता बच्चों का व्यवहार, पैसों का व्यवहार, यह टोपीक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा गुजराती में सत्संग होगा तथा आपत्पुत्र भाईयों तथा आपत्पुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग किए जाएँगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। अगर आपके मोबाइल में FM की सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे। 3) शिविर में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

20 मई (शनि) - सत्संग तथा 21 मई (रवि) - ज्ञानविधि

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2023

|               |                  |  |
|---------------|------------------|--|
| 24 मई (बुध)   | सुबह 10-30 से 12 | - आपत्पुत्र सत्संग                                       |
|               | शाम 4-30 से 7    | - पारायण - प्रतिक्रमण - प्रश्नोत्तरी                     |
| 25 मई (गुरु)  | सुबह 10-30 से 12 | - प्रश्नोत्तरी सत्संग                                    |
|               | शाम 5 से 8       | - <u>ज्ञानविधि</u>                                       |
| 26 मई (शुक्र) | सुबह 10-30 से 12 | - सत्संग (टोपिक - व्यवस्थित शक्ति)                       |
|               | शाम 5-30 से 7    | - सत्संग (टोपिक - फाईलों का सम्भाव से निकाल)             |
| 27 मई (शनि)   | सुबह 10-30 से 12 | - प्रश्नोत्तरी सत्संग                                    |
|               | शाम 5-30 से 7    | - श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा |
| 28 मई (रवि)   | सुबह 10-30 से 12 | - शिविरार्थीओं के लिए पूज्यश्री के दर्शन                 |
|               | शाम 5-30 से 7    | - सत्संग (टोपिक - 5 आज्ञा का महत्व)                      |

**सूचना :** यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

बडोदरा

12-13 मई (शुक्र-शनि) शाम 7-30 से 10-30 - सत्संग

14 मई (रवि) शाम 6 से 9-30 - ज्ञानविधि

**स्थल :** दादा भगवान सत्संग ग्राउन्ड, निलाम्बर सर्कल से प्रिया सिनेमा रोड, भायली, बडोदरा। **संपर्क :** 6354253693

**त्रिमंदिरों के संपर्क :** अडालज : 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमेरेली : 9924344460, बडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क :** अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445, बडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820 यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

ध्रांगधा : त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव : ता. 24 – 26 फरवरी 2023



अप्रैल 2023  
वर्ष-18 अंक-6  
अखंड क्रमांक - 210

## दादाश्री

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023  
Valid up to 31-12-2023  
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023  
Valid up to 31-12-2023  
Posted at Adalaj Post Office  
on 15th of every month.

### युद्धगल परिणति में राग-द्वेष न हो, वही स्व-पुरुषार्थ

स्वरूपज्ञान के बाद सभी स्वभावभाव में आते हैं। स्वयं पुरुष होने के बाद चेतन पुरुषार्थ उत्पन्न होता है, स्वाभाविक पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। और जब स्वयं परमात्म पुरुषार्थ में आता है, तब स्वयं ही परमात्म स्वरूप हो गया। सभी संयोग इकट्ठे होते हैं, तभी रिलेटिव कार्य होता है, वह 'व्यवस्थित' है। 'ज्ञानी' क्या कहते हैं कि इस भ्रांति के पुरुषार्थ में थे, अब स्वरूपज्ञान प्राप्ति के बाद 'रियल' पुरुषार्थ में लग जाओ कि जहाँ संयोगों की ज़रूरत नहीं है। 'रियल' पुरुषार्थ में तो किसी वस्तु की ज़रूरत नहीं रहती और 'रिलेटिव' पुरुषार्थ में मन-वचन-काया सभी संयोगों की ज़रूरत पड़ेगी। स्व-पुरुषार्थ कौन सा? युद्धगल परिणति में कहीं भी राग-द्वेष नहीं हो वह, फिर मार डाले तो भी राग-द्वेष नहीं होते।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Ambo Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.